SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-02, December- 2024
www.shikshasamvad.com

"भारतीय लोक कला –अतीतकाल से वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में"

डॉ0 नरेन्द्र कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर,
जनता पी0जी0 कॉलेज, रामपुर, (उ0प्र0)

सारांश

भारत एक प्राचीन, सांस्कृतिक राष्ट्र है, यहाँ कला मानव संस्कृति को उपज है। इसका प्रारम्भ मानव की सौदर्य भावना का परिचायक है। भारत की कला परम्परा, प्राचीनता और आधुनिकता में अनूठा समन्वय दिलाई देता है। लोक–कला का हमारे जीवन में बहुत बड़ा महत्व है, तथा प्राचीन परम्परा से आज तक लोक कला अपना महत्व बनाये हुए है तथा निरन्तर आगे बढ़ रही है।

कलाओं के अंतर्गत चित्रकला, स्थापत्यकला, मूर्तिकला, लोककला तथा हस्त कला एवं शिल्प कला प्रमुख हैं, उन सभी कलाओं की कलात्मक अभिव्यक्ति की दृष्टि से भारत के जनजीवन में न केवल प्रागैतिहासिक युग से अपितु वर्तमान में भी इसका विशेष महत्व दृष्टिगोचर होता है।

मनुष्य का जीवन लोक कलाओं के बिना अधूरा है, यह व्यक्ति को बेहतर जीवन जीने की कला सिखाती है। जीवन में रंग भरने का काम करती है, यह मनुष्य की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी है।
लोक संस्कृति, लोक कलाओं के द्वारा मनुष्य को बेहतर मनुष्य बनाने के लिए उपयोगी है, लोक कला के बिना मनुष्य का जीवन नीरस है।
हमारा देश लोक–कलायों से समृद्ध है, प्राचीन काल परम्परा से लेकर आज तक यह लोक जीवन को आनंदित एवं आदोलित करती रही है। हमारी लोक कलायें बहुमुखी और बहुरुपी हैं, उनमें स्थान आकृतिक भाव, भेद और प्रस्तुत व्यवहार में जो भी अन्तर हो उनमें सांस्कृतिक एकता का सूत्र दिखाई देता है।

लोक कला हमारी वो सांस्कृतिक धरोहर हैं जो पीढ़ी दर पीढी स्थानान्तरित होकर आगे बढ़ती हैई आज के वर्तमान समय में अपने बदलते एवं बढ़ते हुए स्वरूप को विस्तृत करते हुए नित नये प्रयोगों के कर चुकी है। साथ खुद को स्थापित कर चुकी है।

प्रस्तावनाः– कला भानव संस्कृति की उपज है, कला मानत की सौदर्य भावना की परिचायक है। यहाँ की कला एवं संस्कृति में लोक–संस्कृति के रूप में लोक कला का अनूण समन्वय दिखाई देता है।

लोक कला परम्परागत कला का वह आवश्यक स्वरूप है कि जिसने अपने स्थाई प्रारूप को एक लम्बी अवधि से आज तक बनाये रखा अर्थात (प्राचीन परम्परा से लेकर भाज तक, जिसके सार्वभौमिक भाना गया है। कारण उसका स्वरूप सार्वभौमिक माना गया है।

प्राचीन परम्परा से लेकर आज के वर्तमान काल तक इस सहज कला का सफलतापूर्वक देश, समाज व ग्रह की समृद्धि हेतु प्रयोग किया गया है। लोक कला आत्मिक शांति व मंगल भावनाओं से ओत–प्रोत कला है।

भारतीय लोक कला हमारी परम्पराओं, मान्यताओं, कथाओं, संस्कृति, तीर्य, त्यौहारों व संस्कारों आदि पर आधारित होती है, लोक कला के आयाम जन्म से मृत्यु तक हमारे साथ जुड़े होते हैं। लोक कला मनोरंजन व जादू–टोना, टोटका तथा अलंकरण आदि के रूपों में भी अपनायी जाती है। लोक कला विषय, माध्यम व तकनीक आदि की दृ ष्टि से कला के लिए एक महत्वपूर्ण अंग होती है। साथ हो हमें गर्न है कि भारतीय लोक–कला दुनिया के अन्य राष्ट्रों की तुलना में हर दृष्टि से सबसे ज्यादा समृद्धि मानी जाती है।

यथा सुमेरुः प्रवरो नागानां यथाण्डजानां गरुड प्रधानः।।
यथा नाराणां प्रवरं क्षितीशस्तथा कलानामिंह चित्रकल्पः।।

जैसे. पर्वतों में सुमेक श्रेष्ठ है, पक्षियों में भारु प्रधान है और मनुष्यों में राणा उत्तम है, उसी प्रकार कलाओं में कलायों में लोककला श्रेष्ठ मानी जाती है। जिस प्रकार सामाजिक रीति–रिवाजों में लोक–कला का प्रभाव संस्कृति की रोड़ की हड्डी की तरह मानव जीवन में महत्व रखती हैं।

भारत की अनेक जातियाँ व जनजातियों में पीठी दर पौड़ी चली आ रही चारम्परिक कलाओं को लोक कला कहते हैं। अर्थात लोक कला मूलतः जन साधारण या जनः मानस (जन सामान्य) की कला को लोक कला कहते हैं।

लोक कला जन साधारण की सहज अभिव्यक्ति का एक रूप और माध्यम है। यह आरम्भ से ही मानव सभ्यता के साथ धार्मिक विश्वासों और आस्थाओं के साथ पली–बढ़ी है। तोक कला अपने परम्परागत, विश्वासों, धार्मिक आस्थाओं, रहस्यात्मक संकेतों, अतीत की प्रेरणा पर आधारित होते हैं।

लोक कला की परम्परा भारत में प्राचीन काल से लेकर आज तक चली आ रही है, तथा समय के साथ–साथ इसमें परिवर्तन होते आ रहे हैं। इसी के साथ ही आज समाज की फम्परा, सभ्यता एवं भावना आदि का इतिहास क्रमवान रूप में पाये जाते हैं। लोक कला को परम्परा से आगे बढ़ाने का श्रेय हमारी ग्रामीण जनता को दिया जाता है। जिसके काटा इसे विश्वकला की प्रगतिशील भावनात्मक धारा के साथ लिया गया है और साथ ही इसने उस और प्रगति भी की है।

कला मानव जीवन की सौन्दर्यानुभूति के आदर्शो को प्रकट करती है। जैसे–मोहन जोदगे एवं हडप्पा से प्राप्त वस्तुओं से प्राचीनता के महत्व का पता चलता है। वैदिक काल से आजतक के युग की कला पर उस युग की छाप हमें आज भी देखने को मिलती है।

लोक कला जन सामान्य के परम्परागत धार्मिक भावना के रूप में विकसित हुई है। कलायों की उन्नति एवं विकास में लोक कला का भी बहुत है। कवाओं का विकास राजाओं के दरबारी प्राश्रयों में व्यवसायी कलाकारों के द्वारा

होता है, परन्तु लोक कला का विकास, साधारण जनता के घरों, जन–मानस प्रसिद्धि के सरल शान्त स्वाभाविक रूप में धार्मिक तथा सांस्कृतिक व पारिवारिक रुढियो एवं परम्पराओं के साथ बौद्धिकता के बिना ही निरन्तर होता रहता है।

भारत की सांस्कृतिक विरासत में लोककला अपने विभिन्न रूपों में अनगढ़ होते हुए भी सौन्दयत्मिकता के साथ ही मौलिक सत्ता की महत्ता को अभिव्यंजित करती है। साथ ही उसमें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित होते–होते नवीनता को ग्रहण करती हुई मौलिक सौर्य में मिहित होती है।

ऐतिहासिक महत्वः लोक कला सम्बन्ध मानव जीबन के प्रारम्भ से लेकर हमारे पूर्वजों के कालखण्ड के साथ– साथ हमारे वर्तमान से भी जुड़ा हुआ है। आज का मनुष्य तब के मनुष्य की ही तरह है क्योकि संस्कृति, सभ्यता के आज का मानव उन्नत रूप एवं आधुनिकता के साथ जुड़ा हुआ है। प्राचीन काल का मनुष्य असभ्य रूप से सकर उस समय की परिस्थिति के अनुसार रहते थे। नादेयों का पानी पीना, कन्दमूल फल खाना धीरे–धीरे शिकार के लिए जमीले हथियारों का आहिन्कार व आग का आविष्कार हो गया तो के माँस को आग में भूनकर खाने लगे। उस समय भानव गुफाओं में रहते थे। गुफाओं से पहले वह अकेले तथा उसके बाद मुंड बनाकर रखते थे। जब गुफाओं में रहना शुरू किया तो गुरु की दीवारों पर अनेक चित्र काने शुरू किये, इन चित्रों को आदि मानव की को दर्शाया गया है कला के प्रति रुचि तथा इसे आदिम कला भी कहते है। प्राचीन समय में लोक–गायाओं से संबंधित चित्र बने हैं, जिनमें दक्षिणी भारत के लोक–देवता, तरी भारत के लोक देवता, राजस्थान के लोक देवता प्रमुख हैं। लोक–कला भारत के हर घर एवे जन मानस की लोक कला है इसलिए ऐतिहासिक रूप से इसका महत्व बहुत अधिक है। आज के समय में इसका प्रचार–प्रसार प्रत्येक राज्य में लोक–पर्ने के माध्यम से भी हो रहा है।

लोक कलाओं का आदि मानब से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है, आदि मानव प्रकृति की शक्तियों से प्रेरित होकर उनका सरल भाव से दैवीय शक्तियों के रूप में प्रदान किया। लोक कला हमारे समाज में आदि काल से है। प्राचीन गुफाओं में स्वस्तिक, चौखुटे खाने, कुन्डली चिन्छ तथा हाथों के छापों के साथ–साथ अनेक ऐसे चिन्ह बनाये गये हैं। आज की आधुनिक लोक कला आदि काल के कला समय की लोक कला का ही एक परम्परागत विकसित रूप है। कलाओं की उन्नति और विकास में लोककला का बहुत बड़ा महत्व है। लोक कला दैवीय रूपों एवं प्रतीकों तथा परम्परागत विश्वासों पर आधारित है तो इसरी और सामाजिक पक्ष के रीति–रिवाजों तथा परम्पराओं पर आधारित है। लोक कला में विभिन्न प्राकृतिक शक्तियों एवं देवी–देवताओं का परस्परागत महत्व होने के कारण उसमें प्रतीकात्मक रूपों का अंकन व चित्रण प्रधान होता है। कोई भी संस्कार, पूजा, शुभकार्य इनके बिना पूरा नहीं होता । लोक कला मानव विकास के इतिहास में एक आदिम कला उसरी और सुसंस्कृत कला के मध्य रही है। बदलते परिवेश में मानव संवेदनाओं में बदलाव आता जा रहा है। ग्रामीण जीवन में भी व्यवसायिकता, उपयोगिता, वौनिकता में कलाव आ रहा है। लोक मानव द्वारा समस्त कला जैसे चित्र, मूर्ति, नृत्य, संगीत या अन्य कोई कला जो स्वयं की सुखानुभूति के लिए की जाये वह लोक क्ला के अर्न्तगत या जाती है।

भारत की लोक संस्कृति–

भारतीय लोक संस्कृति में लोक कला का सम्बन्य बहुत पुराना है। बोक कला लोक संस्कृति जगत के अंतर्गत ही आती है। लोक कला का हमारे संस्कारों, रीति–रिवाजों, प्राचीन मान्यतायों, प्रवृत्तियों, लोक पर्ने कादि से पुराना

सम्बन्ध है। मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक हुए होते हैं। यद्यपि लोक कला के आयाम जुडे आज सभ्यता के उत्पान और अनेक आविष्कारों के कारण हमारे आचार–विचार न संस्कृति में काफी बदलाव आ चुका है।

लोक कला हमारे देश की एक महत्वपूर्व विस्मृति और इसकी पारिलक्षणता मात्ममुख का एक मात्र का स्वरूप लोक कला संस्कारों आदि पर अनेक कला है। लोक जीवन साध्वन है। अता है। हमारे तीज–त्योहारों व किा पूर्ति, अल्पना, रंगोली आदि के ऐसे आकार बनते है जो लोक की अमानत माने जाते हैं। मनुष्य के जन्म, मुंडन, नामकरण, विवाह संस्कार से लेकर जीवन के अन्तिम संस्कार आदि की प्रगति में लोक कला आकारों का अपना अर्थ होता है। तमाम एसे उत्सव होते है जहाँ मनोरंजन अलंकरण केले फिंगर से चित्र, मूर्ति, पुतले, खिलोने आदि लोक कला आकारों के बनाये जाते हैं।

प्रान्तीय कलाः–

हमारे देश भारत में पृथ्वी को 'धरती माता' कहकर पूजा गया है। अपनी धरती माता (माँ) के प्रति भक्ति भावना से प्रेरित होकर लोक–मानव ने धरती का श्रृंगार तथा अलंकरण करके धरती माँ के प्रति अपनी श्रद्धा को प्रदर्शित किया है। भारत सध्या देश के भिन्न–भिन्न प्रान्तों में अलग–अलग नामों से धरती माता को अलंकृत करने का काम किया जाता है– जैसे गुजरात में 'साथिया', राजस्थान में भावना, महाराष्ट्र में 'रंगोली', उत्तर प्रदेश में 'सोन रखना' या 'चौक पूरना', बिहार में 'अध्यन', बंगाल प्राप्त में 'अल्पना', उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र था पहाड़ी क्षेत्र में 'आपना', उडीसा में में चीता–जोटी, इसके अलावा दक्षिण भारत में धरती माँ को विभिन्न चालेखनों के द्वारा सजाने के काम को–कोलम के नाम से पुकारते हैं।

भारतीय उपखंड में रामायण महाभारत एवं पौराणिक गाथाओं का नाट्यपूर्ण लोक कला मंचन की प्राचीन परम्परा रही है। चित्रकथी, कठपुतली, एकलपात्र, नाट्य गान, महाराष्ट्र में कीर्तन, उत्तरी भारत में रामलीला का प्रयोग होता आ रहा है।

लोक कला में सौदर्य का आकर्षण, संगीत और नृत्य की माधुर्य और लय चित्रकला की अभिव्यक्ति मानव की सुन्दरतम भावनाओं भावनाओं को सदैव अपनी और आकर्षित किये रहती है। किसी भी देश प्रदेश की जन–कला वहाँ के जन सामान्य के ह्रदय कसे छू लेती है।

धरती की इन अलंकरण विधियों में विभिन्न रंगो से या उनके चूर्ण से भूमि पर, घर के आंगन, कक्ष के फर्श, पूज्य के स्थान या गृह–द्वार पर आलेखन किया जाता है, यह कार्य परम्परागत रूप से प्रचलित एक लोक शैली है जिसका मुख्य ध्येय भूमिको रंगों से सजाकर सौदर्य एवं आकर्षण प्रदान करना है। भारतवर्ष में हर क्षेत्र तथा घर में धरती को अलंकृत करने के किर इसी प्रकार के आनोखन काये जाते हैं। रंगोली सजाना चौक पूरना, या आपना और कोलम लगाना धार्मिक भाव से प्रेरित होता है, जिसमें आदर एवं श्रद्धा से आलेखन स्थना की जाती है इन आलेखनों का उद्देश्य आकर्षक तथा सुन्दर ढंग से धरती पर अलंकरण बनाकर आध्यत्मिक दृष्टि से पारलौकिक शक्तियों की पूजा आराधना करना होता है।

महाराष्ट्र में रंगोली के द्वारा धरती का अलंकरण अनेक रंगों के चूर्ण को धरती पर आलेखन के रूप में बिखेर कर किया जाता है। राजस्थान में विशेष अवसरों पर धरती, दीवारों, छारों, महरावों तथा चौक में तरह के आलेखन बनाये जाते हैं, जिसे कहते हैं।

बंगाल में त्योहारों, विवाह, उत्सवों आदि के अवसर पर 'अल्पना' बनाई जाती है। अल्पना का घरों की लिपीपुती भूमि पर तथा दीवारों पर गीले सफेद रंग से रेखांकन किया जाता है, फिर उसमें विभिन्न ज्यामितीय अभिप्राय वृत्त चतुर्भज, त्रिभुज, षटकोण, अष्ट कोण आदि बनाकर रेखाऐं डालकर रंगों से भरे जाते हैं।

इसी प्रकार उत्तर प्रेदश, बिहार, पंजाब उत्तराखण्ड आदि राज्यों में अपनी–अपनी कलाए प्रसिद्ध है जो हमारे धार्मिक, रीति–रिवाज, त्योहारों को एक नई दिशा प्रदान करनी हैं।

पट्ट चित्र कला यह ओडिशा की पारम्परिक चित्रकला है इस कला में समुद्रा, बलराम, भगवान जगन्नाथ, दशावतार और कृष्ण के जीवन से संबंधित है।

वर्ती कला महाराष्ट्र के जनजातीय प्रदेश में रहने वाले जनजातीय वर्ग से है। ये अलंकृत चित्र गोंड तथा कोल जैसे जनजातीय घरों और पूजा घरों के फर्शों और दीवारों पर बनाये जाते है, वृक्ष पक्षी, नर तथा नारी मिलकर वर्ली चित्र को पूर्णता प्रदान करते हैं, ये चित्र शुभ अवसरों पर महिलाओं द्वारा मिलकर बनाये जाते हैं। वर्ली जीवन शैली की झाँकी सरल आकृतियों में खूबसूरती से प्रस्तुत की जाती हैं।

थांका कला, भगवान बुद्ध के जीवन और उनकी शिक्षाओं पर आधारित कला को थंका चिजकता कहते हैं।

यह की कला भारतीय, नेपाली तथा तिब्बती संस्कृति एवं दार्शनिक, मूल्यो, धर्म को अभिव्यक्त किया जाता रहा है।

मधुबनी कला मिथिलांचल क्षेत्र जैसे बिहार दरभंगा, मधुवनी एवं नेपाल के कुछ क्षेत्रों की प्रमुख कला है। मधुवनी के णितबार पुर गाँव इस लोक चित्रकला का मुख्य केन्द्र है। देवता इस कला में खासतौर पर कुल चित्रण होता है। हिन्दू–देवी–देवताओं की तस्वीर, प्राकृतिक नाजारे जैसे सूर्य चन्द्रमा, धार्मिक वेड–जैधे जैसे– तुलसी और निकाह के हरम देखने को मिलेंगें। मधुबनी पेंटिंग दो तरह की होती है – भित्ति चित्रण और अरिन या अल्पना।

इसके अलावा अनेक कलाएं जो लोक चित्रकला को प्रकाशवान कर रही है उनमें तंजौर कला, पिथौरा कला, कलमकारी कला, फर्श कला (पट कला), कलमेजुथु कला आदि लोक चित्र कलाए हैं। जो लोक चित्र कला का केन्द्र रही हैं।

अन्त में हम कह सकते है कि भारतीय बोक कला प्राचीन परम्परा से अब तक निरन्तर चली आ रही कला का स्वरूप विश्वस्तरीय है, विश्व में भारतीय लोक कमा को श्रेष्ठ माना गया है। लोक कला राष्ट्र की निधि होती है। लोक कलाएं शास्त्रीय कलाओं का आधार तत्व रही हैं, शास्त्रीय कलाओं का निकास लोक कलाओं की क्रमिक विकास की परिषति रही है। लोक कला शास्वत है, उसकी कला का कभी लोप नहीं होता। लोक कला का विकास एवं प्रसार अनेक विधाओं में देखा जा सकता है। लोक कवा देवी रूपों एवं सुतीकों तथा परम्परागत विश्वासों पर आधारित है।

लोक कला एवं प्राचीन परम्परा आज भी विद्यमान है। आज की कला को शक्ति देने के लिए परम्परागत कला आधुनिक कलाकारों को गति एवं दिशा देने का भब्छा कार्य करती आ रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. भासीय चित्र कला का उतिहास डॉ० आर० ए० अग्रवाल (2000)
2. भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, बरेली–अविनाश बहादुर वर्मा
3. कला और आधुनिक प्रवृत्तियाँ– राम चन्द्र शुक्ल
4. कला और कलम– डॉ० गिरिराज किशोर अग्रवाल
5. चित्रकला एवं लोक कला– डॉ० शेखर चन्द्र जोशी (2009)
6. कला एवं तकनीक– डॉ० अविनाश बहादुर वर्मा (201)
7. w.w.w.google.com/ lokkalat Painting
8. भारतीय कला– राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी– डॉ० राजेश कुमार व्यास–2017
9. भारतीय लोक एवं आदिवासी कलाओं के विविधरूप–प्रगति प्रकाशन– प्रो0 हेमलता अग्रवाल–2024
10. चित्रकला एवं लोककलाओं के सिद्धान्त एवं तकनीक–डॉ0 नीलिमा गुप्ता–2011

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-02, Issue-02, Dec.- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Dec-2024/18

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ0 नरेन्द्र कुमार

For publication of research paper title

"भारतीय लोक कला –अतीतकाल से वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-02, Month December, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com